जगदम्बिका की महिमा

श्रीश्रीमाँ सर्वाणी

युगों-युगों से इस विश्व में जिस प्रकार श्रीभगवान की लीला होती है उसी प्रकार श्रीभगवती की भी लीला होती है। परमब्रह्मरूपिणी आदिशक्ति की लीला के विषय में नीचे एक अभिनव पौराणिक आख्यान दिया गया है –

प्राचीनकाल में कोशलदेश में पुष्प नामक भूपति के पुत्र ध्रुवसंधि नामक सूर्यवंशीय एक महातेजा नृपति थे। वे सर्वप्रकार से समृद्धशाली होकर सदा सत्यव्रत अवलम्बन पूर्वक अयोध्या नगरी में वास करते थे। ऐसे गुण संपन्न उस नृपति के परम रूपवती दो पत्नियाँ थी। तन्मध्य जो धर्मपत्नी थीं उनका नाम था मनोरमा। वे अतिशय सौन्दर्यवती और सर्वकार्य में विचक्षण थी। द्वितीय पत्नी लीलावती भी सर्वगुणसंपन्ना रूपलावण्यवती थीं। ध्रुवसंधि उन पत्नीद्वय के साथ कभी शयनागार में, कभी उपवन के मध्य क्रीड़ापर्वत पर एवं कभी-कभी विविध प्रकार के सरोवर व उपवन में विहार करते थे। इसी प्रकार कुछ दिन बीत जाने के बाद मनोरमा ने शुभ समय में राजलक्षणयुक्त एक परम सुन्दर पुत्र प्रसव किया! तत्पश्चात् एक महीने के मध्य द्वितीय पत्नी लीलावती ने भी शुभकाल में एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। नृपति ध्रुवसंधि उभय पुत्र को ही समरूप से स्नेह करते थे। क्रमशः सानन्द हृदय होकर दोनों पुत्रों का जातकर्मादि व चूड़ाकरण समाप्त कर ज्येष्ठ पुत्र का नाम हुआ 'सुदर्शन' एवं लीलावती के गर्भजात कनिष्ठ पुत्र का नाम हुआ 'शत्रुजित्'। शुभदर्शन शत्रुजित् अतिशय प्रियभाषी होने से राजा, मंत्रीवर्ग एवं समुदय प्रजागण के ही अतीव प्रिय पात्र थे। शत्रुजित् के अधिक गुणवान होने से राजा की उसके ऊपर जैसी प्रीति थी, सुदर्शन के मंद भाग्य हेतु उसके ऊपर तादृश नहीं थी। ऐसे ही कुछदिन व्यतीत हो जाने के पश्चात् एक दिन राजा वन में शिकार करने गए। अति भीषण निविड़ वन में राजा ने बल-शाली सिंह द्वारा आक्रांत होकर अवशेष में प्राणत्याग कर दिए तब उस भयानक सिंह को राजा के लोगों ने प्रहार करते हुए मार दिया।

अनंतर समुदय प्रजा, पुरवासी एवं कुल पुरोहित वशिष्ठदेव सुदर्शन को राज पद देने के लिए मंत्रणा करने लगे एवं प्रधान-प्रधान मंत्रीगण भी धर्मपत्नी के गर्भ सम्भूत, शान्त, सुरूप सुलक्षणयुक्त धार्मिक कहकर सुदर्शन को ही राज्याधिकार देने के लिए उपयुक्त पात्र निर्वाचित किया तभी लीलावती के पिता उज्जयिनी के राजा युधाजित् मंत्रीगणों का मतामत सुनकर वहाँ त्वरित् उपस्थित हुए। दूसरी ओर मनोरमा के पिता कलिंग के राजा वीरसेन भी सुदर्शन के हितार्थ अयोध्या में उपस्थित हुए। तदनन्तर निज-निज दौहित्र के राज्यलाभ के हित में लोभान्वित उन नृपद्वय में विवाद उपस्थित हुआ तब नृपवर युधाजित् एवं वीरसेन का ऐसा भीषण कलह आरम्भ हुआ कि राज्य में भीषण उपद्रव होने लगा एवं नृपतिद्वय भी युद्धाभिलाषा हेतु तैयार हो गए। तब क्रोध एवं लोभ के वशवर्ती होकर अस्त्रशस्त्र ग्रहणपूर्वक उस राजयुगल का संग्राम आरम्भ होने से पहले उन दोनों में खूब संघर्ष हुआ। उस संघर्ष में युधाजित् ने वीरसेन की हत्या कर दी। तब तदीय सेनागण रण में हार जाने और राजा के मारे जाने के बाद चतुर्दिशा में पलायन करने लगे। इस तरफ मनोरमा, उनके पिता युद्ध में निहत हुए हैं ऐसा जानकर परवर्ती में उसके पुत्र सुदर्शन की भी युधाजित् हत्या कर देगा, ऐसी आशंका में क्या किया जाए, कहाँ जाया जाए, इस प्रकार चिन्तन करने लगी। अनेक चिन्ता-भावना करने के बाद उन्होंने सर्वकार्य में निपुण, अतिमानी विदल्ल नामक मंत्रीवर को निर्जन में बुलवाकर 'क्या करना कर्तव्य है' ऐसी आलोचना करने लगी। मंत्रीवर ने विवेचना कर बताया कि ''मातः यहाँ रहना ठीक नहीं होगा। अविलम्ब चलिए वाराणसी स्थित अरण्य मध्य हमसब प्रस्थान करते हैं। वहाँ सुबाहु नाम का मेरा एक मातुल हैं जो युधाजित् की अपेक्षा अधिक बलशाली हैं। वह

ले जाओ।'' यह सुनते ही राजा ने वृद्ध मंत्री विदल्ल के निकट परामर्श ग्रहण किया एवं मुनिवर भरद्वाज को प्रणाम कर उस स्थल से निज गन्तव्य पर चले गए।

इसतरफ मनोरमा भी निश्चिन्त होकर सुदर्शन का प्रतिपालन करने लगी। अनन्तर वह नृपबालक मुनि बालकगणों के संग खेल-खेल में समय बिताने लगा। एकदिन जब बालकगण खेल रहे थे ठीक उसी समय मंत्री विदल्ल के वहाँ आने पर किसी एक बालक ने कौतूहल से सुदर्शन के निकट आकर उसको 'क्लीव' कहकर सम्बोधन किया। तब सुदर्शन ने उस 'क्लीव' शब्द को श्रवण करते ही स्वीय पूर्वजन्म के पुण्यबल से 'क्लीव' शब्द के प्रथम अक्षर 'क्ली', इस अक्षर को हृदय में धारण पूर्वक अनुस्वार विहीन कामराजाख्य बीज का बारंबार जप करना शुरु कर दिया। बालक सुदर्शन को भवितव्यतावशत: ही अपने आप अद्‌भुत कामराजाख्य बीजमंत्र प्राप्त हुआ। सुदर्शन की उम्र जब पाँच वर्ष हुई तब शयन में, स्वप्न में, जागरण में और क्रीड़ा-काल में, अर्थात् समग्र समय वह मन ही मन उस मंत्र का जप करते थे। जब उसकी उम्र ग्यारह वर्ष की हुई तब भरद्वाज ऋषि ने उनको सांर्ग, वेद, धनुर्वेद व नीति शास्त्र सकल शास्त्रीय विधि अनुसार अध्ययन कराने लगे। अल्पकाल में ही उस बालक सुदर्शन ने मानों जैसे मंत्रबल से ही सारी विद्या का अभ्यास कर लिया। ध्यानकाल में एकदिन उन्होंने सर्वांग रक्तालंकार भूषिता रक्तवर्णा रक्ताम्बर परिधृता गरुड़ारूढ़ा अति अद्‌भुत दिव्यमूर्तिमयी देवी वैष्णवी शक्ति का सहसा दर्शन पाया और आनन्द से प्रफुल्ल वदन हो गए। इस घटना के पश्चात् सुदर्शन उसी दिव्य माता की सेवा करत: सर्वदा वन के मध्य निवास करते हुए सर्वविद्या में पारदर्शी होने के पश्चात् एकदिन नदीतट पर पूजाकर्मरत अवस्था में अवस्थान करने के समय उसी भगवती अम्बिका देवी का पुन: दर्शन पाने से देवी ने उनको उत्कृष्ट शरासन, शाणित शर-निकर एवं तुणीर व कवच प्रदान किया। उसी समय सर्वसुलक्षणयुक्ता अलौकिक रूपलावण्य-मंडिता शशीकला, काशीराज की प्रियतमा कन्या ने वन के मध्य सुदर्शन को देख लिया। शशीकला ने लोगों से सुना कि वन के मध्य जो राजकुमार अवस्थान कर रहा है उसका नाम सुदर्शन हैं। सुदर्शन शौर्यशाली एवं देखने में कन्दर्पकान्ति हैं; सुदर्शन के दर्शनमात्र से ही शशीकला ने मन ही मन उनको अपने पति के रूप में वरण कर लिया। इस दिन रात्रि-शेषकाल में जगज्जननी देवी भगवती ने स्वप्नावस्था में शशीकला को दर्शन दान कर कहा, ''हे सुकन्ये! तुम मेरे निकट वर प्रार्थना करो। सुदर्शन मेरा परम भक्त है, वह मेरे कहने पर आस्थापूर्वक तुम्हारे मन की समस्त कामना सफल करेगा, इसमें सन्देह नहीं है।'' स्वप्नावस्था में जगदम्बिका के निकट इस प्रकार आश्वासन प्राप्त कर शशीकला ने अपने अन्तर में अतीव आनन्द अनुभव किया। क्रमश: शशीकला का सानन्दभाव ऐसे एक पर्याय पर पहुँच गया कि बारंबार प्रश्न करने पर भी उनकी माता न जान पायी कि उस अवस्था के होने का निगुढ़ कारण है क्या? अनन्तर एकदिन वह सखीगण के सहित मनोहर उपवन में विहार करने के समय जब एक चम्पक वृक्षतले खड़ी थी, तब एक ब्राह्मण को शीघ्र उसी पथ से आते देखा। शशीकला ने उनको प्रणाम करते हुए पूछा, ''आप कहाँ से आ रहे हैं?'' ब्राह्मण ने कहा, ''मैं भरद्वाज मुनि के आश्रम से आ रहा हूँ।'' शशीकला ने फिर पूछा, ''हे महाभाग! उस आश्रम में वर्णनीय एवं विशेषरूप दर्शनीय अलौकिक वस्तु क्या है?'' यह सुनकर ब्राह्मण ने कहा, ''वहाँ ध्रुवसंधि के पुत्र श्रीमान सुदर्शन है। ये सुदर्शन वास्तविक ही 'सुदर्शन' है; जिस व्यक्ति ने इस कुमार को देखा नहीं उसके चक्षु निष्फल हैं, ऐसा मेरा अनुभव है। मैं ऐसी विवेचना करता हूँ कि सृष्टि समय कौतुकवशत: गुणों का आकर देखने के लिए ही सुदर्शन रूपी एकाधार में समुदय गुणों को निहित किया गया हैं। यह नृपकुमार ही तुम्हारे भर्ता होने के लिए उपयुक्त हैं। शायद विधाता ने भी मणिकांचन के सदृश तुम दोनों का संयोग विधान कर रखा है।'' ब्राह्मण के मुख से ऐसे प्रशंसनीय वाक्यों को श्रवण करते हुए शशीकला सुदर्शन के प्रति अधिक प्रेमासक्त हो पड़ी। शशीकला ने कामनाबाण से पीड़ित होते हुए एकदिन अपने मन की सारी बातें अपनी सखी को बता दी। तत्पश्चात् उससे कहा, ''सखी, विशेष बात यह है कि अब मैं पिताश्री के अधीन हूँ। अब पिताश्री यदि मेरा स्वयंवर न करे तो बोलो मैं क्या करूँ? वे अगर सुदर्शन के साथ मेरा विवाह अभी तय करते हैं तो मैं अभी ही उस राजकुमार को रतिदान करूँगी।'' इस तरफ सुदर्शन ध्यान-निमग्न होकर उस उत्तम कामराजाख्य बीजमंत्र का निरंतर जप करने लगा। फिर एकदिन जगदम्बिका ने स्वप्न में उनको दर्शन दिया।

तत्पश्चात् प्रभात के समय शृंगवेरपुर के राजा निषादराज वहाँ उपस्थित हुए एवं सुदर्शन को अश्व चतुष्टय समन्वित पताका शोभित एक उत्कृष्ट रथ उपहार स्वरूप दिया। तब सुदर्शन ने भी निषादराज की परम प्रीति सह फलमूलादि द्वारा सेवा की। तदनन्तर तपस्वी मुनिगण ने सुदर्शन को कहा, ''राजपुत्र, अवश्य ही तुम अल्पदिन के मध्य ही निज प्रताप से राज्य प्राप्त करोगे। हे सुव्रत! विश्वमोहिनी देवी अम्बिका तुम्हारे प्रति प्रसन्न हुई हैं एवं तुम्हारे सहाय भी हुई हैं; अतएव चिन्ता मत करना।'' इसके बाद मुनिगण ने मनोरमा से कहा, ''मातः! अविलम्ब तुम्हारा पुत्र धरातल का अधीश्वर होगा।'' इसके बाद सुदर्शन रथारोहण में जहाँ भी जाते थे उस स्थलपर देवी के तेजःप्रभाव से अक्षौहिणी परिमित सैन्यगण द्वारा वह परिवृत है ऐसा सर्वदा बोध करते थे। मानों यह कामराजाख्य बीजमंत्र का ही प्रताप है।

जगदम्बिका के कीर्तन करते जाने से व्यासदेव ने कहा – ''जो व्यक्ति सद्गुरु के निकट से अद्भुत कामराजाख्य बीज प्राप्त कर पवित्र भाव में शान्तिपूर्ण हृदय मध्य जप कर सके, उसे सर्व प्रकार अभीष्ट फल प्राप्त होता है। पृथ्वी व स्वर्ग में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो उस कल्याणमयी भगवती के प्रसन्न होने से अप्राप्य हो। जिन के चित्त में उस भगवती की अर्चनादि के विषय में विश्वास नहीं होता, वे सब ही मंदगति, वे ही हतभाग्य है एवं वे सब ही रोग शोकादि दुर्भोगादि को प्राप्त करते है। इस भगवती ने ही युगप्रारम्भ में निजशक्ति बल से अखिल देवगण का उत्पादन किया, इसलिए इसको ''आदिमाता'' नाम से अभिहित किया गया है। एकमात्र वे ही समस्त प्राणीगण की बुद्धि, कीर्ति, धृति, लक्ष्मी, शक्ति, श्रद्धा, मति व स्मृतिरूप में प्रत्यक्ष विराजमान रहती हैं। जो सब उनकी माया से विमोहित है वे सब उस कल्याणमयी विश्वेश्वरी को ज्ञात नहीं कर सकते एवं कुतर्ककारी हो कर भजन भी नहीं कर पाते। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, इन्द्र, वरुण, यम, वायु, कुबेर, त्वष्टा, पूषा, अश्विनी कुमार द्वय, द्वादश आदित्य, अष्ट वसु, एकादश रुद्र एवं विश्वदेव व मरुद्गण प्रभृति सकल ही उस सृष्टि-स्थिति-प्रलय कर्त्री देवी को ध्यान करते हैं।'' राजकुमार सुदर्शन उस सर्वार्थदायिनी सर्वकल्याणमयी देवी को सम्यक रूप से परिज्ञात हुए थे। ''वही विद्या-अविद्या स्वरूपिणी, दुराराध्या देवी ही ब्रह्म हैं। योगीगण उसी, मुमुक्षु गण के प्रियवस्तु, परमाशक्ति को योगबल से उपलब्ध करते हैं। जो सात्विकादि त्रिविध सृष्टि करते हुए विश्वात्मा को दिखाते हैं उनकी कृपाभिन्न और कौन परमात्मा के स्वरूप परिज्ञात करने में सक्षम होता है?''

अनन्तर शशीकला के पिता राजा सुबाहु ने कन्या को स्वामी-प्रार्थिनी जानकर अविलम्ब इच्छा-स्वयंवर सभा का आयोजन किया। शशीकला के विवाहार्थ सभागृहादि निर्मित होने से शशीकला ने निभृत में अपने सखी से कहा कि उसे उनकी माताश्री को कहना है कि वह नृपति ध्रुवसंधि के पुत्र सुदर्शन के अलावा और किसी से विवाह न करेंगी। यही देवी अम्बिका का निर्देश हैं। शशीकला की माताश्री ने यह बात सुनते ही राजा को सखी द्वारा सुने वृतांत से अवगत करवाने पर राजा अतीव विस्मयाभिभूत होते हुए सुदर्शन के इतिवृत्तांत को रानी से कहा, ''तुम शशीकला से कहो कि– 'तुम और कभी भी ऐसी अप्रिय बात मत कहना। स्वयंवर सभा में मर्यादाशाली अनेकानेक राजगण का आगमन होगा; उनसब के मध्य जिसको इच्छा होगी उसी को वरण करना'।'' रानी ने राजा की बात शशीकला को बतायी उन्होंने कहा – ''सुदर्शन अतीव दुर्भाग्यशाली हैं; वह राज्य भ्रष्ट, निराश्रय, बल कोष विहीन व बांधवगण द्वारा परित्यक्त होकर अपने माता के सहित वनवास करते हैं। अतएव वे कभी भी तुम्हारे योग्य पति नहीं हो सकते। सुदर्शन के एक भ्राता हैं, जो सर्वसुलक्षण युक्त हैं एवं रूपवान है; वे कोशलदेश में राजत्व करते हैं।'' – सब बात सुनने के पश्चात् भी शशीकला जब सुदर्शन से ही विवाह करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ रही तब पिता माता और क्या करें? इस तरफ शशीकला ने विवाह के पूर्वदिन किसी एक विश्वस्त ब्राह्मण को भरद्वाज-आश्रम में प्रेरण किया एवं सुदर्शन के निकट खबर भेजी कि –'मेरे पिताश्री ने मेरे विवाहार्थ स्वयंवर का आयोजन किया हैं। इस सभा में अनेकानेक ससैन्य राजगण आएंगे; परन्तु हे सुरोपम! देवी भगवती ने स्वप्नयोग में मुझे आदेश प्रदान किया हैं इसीलिए मैं आप को प्रीतिपूर्वक मन ही मन पति रूप में वरण कर चुकी हूँ, इस में मैं दृढ़-प्रतिज्ञ हूँ। आप को न पाने से मैं जीवन विसर्जन कर दूंगी। दैव प्रसाद से अवश्य ही हम दोनों सुखी होंगे। अतएव उस दैव स्वप्न को ही परम सत्य विवेचना करके कल आप अवश्य ही स्वयंवर में आएं।' शशीकला ने ब्राह्मण को ऐसा कहकर दक्षिणादानपूर्वक सुदर्शन के निकट प्रेरण किया। वहाँ सुदर्शन

यह बात सुनकर दूसरे दिन स्वयंवर में गमनोद्यत होने से युधाजित् के हस्त से विनाश होने की आशंकावश मनोरमा पुत्र को स्वयंवर में जाने के लिए विरत होने के लिए कहने से सुदर्शन ने माता को कहा –''मात: जो होने का है वह अवश्य ही होगा, इस विषय में कुछ विचार्य नहीं है। आज मैं जगन्माता भगवती के आदेश से इस स्वयंवर सभा में जा रहा हूँ। आप क्षत्रिय रमणी हैं, अतएव ऐसा शोक मत करिए। भगवती के प्रसाद से मैं किसी से नहीं डरता हूँ।'' तब मनोरमा ने भी पुत्र के साथ स्वयंवर में गमन किया। इधर स्वयंवर में महामहाबलशाली राजागण उपस्थित हुए। तन्मध्य युधाजित् ने शत्रुजित् को लेकर वहाँ उपस्थित होने पर, देखा कि सभा में सुदर्शन भी शामिल है। उसे देखते ही युधाजित् क्रोध से उन्मत्त हो गएं एवं अन्यान्य नृपतिगण ने सोचा कि यह कैसी रहस्य कौतुकपूर्ण घटना है! तब सभी कहने लगे कि उन सब को निमंत्रण देकर काशीराज ने सब का अपमान किया हैं। युधाजित् ने क्रुद्ध होकर महीपतिगणों को कहा, ''मैं कन्या के लिए अवश्य ही उसका संहार करूँगा।'' इस से केरलाधिपति ने युधाजित् को कहा, ''राजन, इस स्वयंवर स्थल पर संग्राम करना उचित नहीं है। यह वीर्यशुल्क नहीं है; अतएव इस में बलपूर्वक कन्या-हरण नहीं होता है। इस में कन्या जिसको इच्छा करेगी उसको ही वरण करेंगी, इस कारण यहाँ विवाद का विषय और है क्या? हे महाबलशाली नृपसत्तम! पूर्व में आप ने अन्याय पूर्वक सुदर्शन को राज्य से निर्वासित करके दौहित्र का राज्याभिषेक किया। महाभाग! यह सुदर्शन ही कोशलाधिपति के यथार्थ पुत्र है; तब आप इस निरपराध राजकुमार का किस लिए संहार करेंगे? ऐसा गर्हित कर्म करने से आपको अवश्य ही कर्मफल भोग करना होगा। धर्म व सत्य की ही जय होती है। आप के दौहित्र भी यहाँ आए है एवं वह भी परम रूपवान एवं राज्ययुक्त है; हो सकता है कि राजकुमारी उनको ही पसन्द करे। यह होने से फिर विवाद का विषय क्या हो सकता है?'' यह बात सुनकर युधाजित् ने नृपतिगणों को उपयुक्त उत्तर प्रदानकर संतुष्ट करते हुए कहा कि पणप्रथा के अनुसार ही इस क्षेत्र में स्वयंवर होना चाहिए। अतएव कन्या के पिता को बुलवाकर तब सभी ने उसका अपना अभिप्राय पूछा। तब नृपति सुबाहु ने स्पष्टत: सब को कह दिया कि उनकी कन्या सुदर्शन को ही अपना पति निर्वाचित कर चुकी हैं, उसने माता-पिता किसी का भी परामर्श नहीं सुना; अतएव मैं निरूपाय हो गया। तब प्रधानतम नृपगण ने उस शान्तमूर्ति स्थिरचित्त एकाकी समागत सुदर्शन को आह्वान पूर्वक पूछा, ''हे महाभाग तुम जो इस राजसभा में एकाकी आए हो, तुम्हें किसने आह्वान किया? तुम्हारे तो सैन्य-मंत्री-सहाय-सम्पत्ति कुछ भी नहीं है; अतएव इस अवस्था में तुम क्या करने के इच्छुक हो?'' सुदर्शन ने कहा, ''हे नृपगण! सत्य ही मेरे सैन्य-मंत्री इत्यादि कुछ भी नहीं है। यहाँ स्वयंवर होगा ऐसा संवाद पाकर मैं दर्शनाभिलाषी हेतु ही यहाँ उपस्थित हुआ हूँ। और एक बात यह है कि देवी भगवती ने मुझे स्वप्नयोग में यहाँ आने के लिए आदेश दिया हैं एवं प्रेरण किया हैं। वही जगदीश्वरी जो निर्धारण करेगी, निश्चय ही आज वह ही घटेगा। मैं शत्रुता क्या है यह नहीं जानता हूँ; मगर जो मेरे साथ शत्रुता करेगा, उसको वह महाविद्या ही शासन करेगी। वही देवी, देवता व मनुष्य प्रभृति अखिल भूतगण में सर्वदा विराज कर रही हैं एवं सकल की ही शक्ति तत्प्रदत्त है; वे जिस मानव को राजा बनाने में इच्छुक होती है, उसी को ही राजा कर देती हैं एवं जिसको निर्धन करना चाहती है उसी को ही निर्धन कर देती है; इसी लिए चिन्ता करने का क्या है? उस परमाशक्ति बिना ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर प्रभृति देवगण भी जब स्पंदित होने में समर्थ नहीं है तब मैं और क्या चिन्तन करूँगा?'' – सुदर्शन के एवंविध वाक्य से नृपतिगण अतिशय सन्तुष्ट हुए।

इसतरफ घटनाचक्र अशान्ति की ओर मोड़ ले रहा है ऐसा जानकर शशीकला ने अपने पिता से कहा, ''हे पिता! मैं जब मन-प्राण से सुदर्शन को पूर्व में ही वरण कर चुकी हूँ तब शुभदिवस व शुभक्षण में शास्त्रोक्त विवाह-विधि के अनुसार सुदर्शन को ही कन्यादान करिए।'' यह सुनकर सुबाहु अतीव चिन्तित होते हुए अन्यान्य नृपतिगण को बुलवाकर सब को किसी भी प्रकार से समझाकर स्वयंवर के आयोजन के लिए कुछ समय मांगा। तत्पश्चात् सत्यव्रत नृपति ने विनम्रभाव से सकल राजागण को प्रकृत सत्य बताकर कहा, ''मैं अवनत मस्तक एवं युग्मकरो से आपसब को चरणों में पतित होकर प्रार्थना कर रहा हूँ कि अब आपलोग मेरे द्वारा पूजादि ग्रहण कर स्व-स्व भवन में गमन करिए। मेरी कन्या मेरे वशवर्ती नहीं है; अतएव, आप सब मेरे कन्या को अपने निज कन्यास्वरूप समझकर उसकी सकल त्रुटि मार्जना कीजिएगा।

तब युधाजित् क्रोध से विवेकहारा हो गया। वे सुबाहु को अकथ्य शब्दों से जर्जरित करते हुए सुदर्शन को संहार कर अपने दौहित्र को कन्यादान करने में इच्छुक हैं ऐसे मनोभिप्राय का प्रकाश किया। विविध प्रकार से युधाजित् तब सुबाहु को समझाने लगे। लेकिन, सुबाहु ने दु:खित हृदय से तब अन्त:पुर में गमन कर अपनी पत्नी से कहा, ''तुम अपनी तनया को जाकर कहो कि राजगण के साथ विवाद होने से मैं क्या करूँगा? अब जो कुछ कर्तव्य है तुम्हीं सम्हालो।'' माता शशीकला को समझाने गई तो उसने कहा, ''यदि मेरे पिता नृपगण से भीत एवं कातर होकर रहते हैं तो मुझे सुदर्शन को सम्प्रदान कर हम दोनों को नगर से वहिष्कृत कर दें। सुदर्शन मुझे रथ पर लेकर नगर से निर्गत होंगे। बाद में जैसा भवितव्य है वह ही होगा।'' तब राजा सुबाहु ने शशीकला के इस प्रकार दृढ़तापूर्ण वचन सुनकर उसके ऊपर विश्वास करके तदनुरूप कार्य निष्पन्न किया। उन्होंने शशीकला के परामर्श अनुसार समग्र राजागण के निकट जाकर कहा, ''आप सब कल स्वयंवर सभा में उपस्थित होईएगा। यह कहकर सुबाहु सारे नृपगण को आवासन में प्रेरण करते हुए वेदविधि अनुसार उसी रात्रिकाल में ही अपनी कन्या का विवाह कर देते हैं। अनन्तर राजा सुबाहु जामाता सुदर्शन को अश्व समन्वित शरसमूहपूर्ण सुचारु रूप में सुसज्जित द्विशत रथ, गिरिश्रृंगतुल्य समुन्नत शरीर स्वर्णालंकार द्वारा भूषित एकशत पंचविंशति मातंग, शत दासदासी, सुन्दर हस्तिनी, महामूल्य भूषण से भूषित सर्व्वविध आयुध धारी सहस्र भृत्य एवं विविध रत्नादि, यथोचित वस्त्रादि, दिव्य व विचित्र पशम के आस्तरण आदि, रमणीय प्रसस्थ वासगृह, द्वि-सहस्र अश्व, तीनशत उष्ट्र एवं दोशत धान्यरसपूर्ण उत्कृष्ट शकट विवाह के यौतुक स्वरूप प्रदान किया।

इसतरफ, नृपतिगण ''विवाह हो गया हैं,'' प्रात:काल में ऐसा श्रवण कर अतिशय रोषाविष्ट हुए एवं नगर के बाहर रहकर परस्पर आलोचना करने लगे – ''आज ही हमसब विवाह के अयोग्य बालक सुदर्शन का निधन करेंगे एवं सुबाहु नन्दिनी को ग्रहण करेंगे। अपितु इसरूप किस प्रकार से हमसब अपमानित होकर अपने गृह में लौटेंगे? चलों, हमसब मिलकर सुदर्शन का जाने का मार्ग अवरोध कर उसका संहार करके निश्चय ही राजकुमारी को हरण करेंगे।'' नृपगण के मध्य में से फिर किसी-किसी ने कहा, ''सुदर्शन का सहांर करने से हमसब को क्या लाभ है?''

विवाह का कार्यादि समाप्त होने के पश्चात् वर-वधू को विदा करने के समय दूत के मुख से युद्ध के आशंका संवाद प्राप्त होने पर राजा सुबाहु को उद्विग्न होते देखकर सुदर्शन ने श्वसुरजी को कहा, ''हमसब को शीघ्र विदा करिए। हमसब अशंकित चित्त से गमन करेंगे। हे नृप! पहले हमसब भरद्वाज-आश्रम में जाएंगे; तत्पश्चात् कहाँ निवास करना समीचीन होगा इस विषय में परामर्श करूँगा। आप नृपगण से मत डरिएं, जगन्माता भवानी ही मेरी सहायता करेंगी।'' जामाता एवं कन्या को विदा करवाकर सुबाहु भी विराट् सैन्यगण लेकर सुदर्शन के पीछे-पीछे गमन करने लगे। परम सौन्दर्यशाली रघुवंश सम्भूत सुदर्शन ने रथ समूह से परिवेष्टित होकर निर्भय पत्नी के सहित रथोपरि अवस्थान कर पथ के मध्य गमन करते-करते, नृपतिगणों के विपुल सैन्यदल का दर्शन किया। सुदर्शन निर्भय होकर रथ में बैठ कर हृदय में अत्यद्भुत कल्याणप्रद एकाक्षर कामराज मंत्र का जप करने लगे। परन्तु महीपालगण राजकन्या को हरण करने के लिए महाकोलाहल करते हुएं युद्धार्थ उत्थित हुएं। तदनन्तर युधाजित् सुदर्शन के सम्मुख आकर उपस्थित हुआ। इसपर शत्रुजित ने भी भ्राता के विनाशार्थ युधाजित् का साथ दिया। तत्पश्चात् वे क्रोधवश हतज्ञान होकर एक दूसरे को शराघात से क्षत-विक्षत करने पर शरजाल वर्षण से वहाँ विषम संघर्ष उपस्थित हुआ। तब सुबाहु भी अनेक सैन्य लेकर जमाई सुदर्शन के साहाय्यार्थ उनके निकट गया। ऐसे में रोमहर्षण निदारुण संग्राम उपस्थित होने से हठात् वहाँ सिंह वाहिनी देवी भगवती प्रादुर्भूत हुई! विचित्रभूषण द्वारा विभूषितांगी नानायुधधरा अलौकिक रमणीमूर्ति उस देवी के गलदेश में मन्दार माला एवं परिधान में दिव्य वसन थे। तत्रत्य नृपगण उनको देखते ही, ''कौन

है यह सिंहवाहिनी रमणी? कहाँ से ये यहाँ आ गई?'' इस प्रकार सोचते हुए अतिशय विस्मित हुए!! परन्तु सुदर्शन ने उनको देखकर सुबाहु को कहा, ''राजन, वह देखिएं! दिव्यदर्शना महादेवी निश्चय ही दयान्विता होकर मेरे प्रति अनुग्रह प्रकाशित करने के लिए ही इसी स्थल पर आविर्भूत हुई हैं। महाराज! अब मैं प्रकृत ही निर्भय हो गया।'' तब जामाता व श्वसुर दोनों ने ही उस दिव्याणी को प्रणाम निवेदन किया।

तत्पश्चात् देवी का वाहन सिंह ऐसे गर्जन कर उठा कि उस से समस्त मातंगगण भीत व कम्पित हो गये। चारों ओर भीषणरूप से वायु प्रवाहित होने लगी एवं दिशाओं ने भीषण रूप धारण किया। तत्काल सुदर्शन ने निज सेनापति को कहा, ''जिस स्थल में नृपतिगण हैं आप मुझे शीघ्र ही उस पथ पर ले चलिए। दुर्म्मतिगण कुपित होकर हमारा क्या करेंगे? स्वयं देवी भगवती हमसब की रक्षार्थ उपस्थित हुई हैं।'' सुदर्शन की बात सुनकर सेनापति उस पथ से अग्रसर हुए यह देखकर युधाजित् ने क्रुद्ध होते हुए अन्यान्य महीपतिओं से कहा, ''आप सब किस लिए भयत्रस्त होकर अवस्थान कर रहे हैं? अविलम्ब पत्नी सहित सुदर्शन का संहार करिए। यह कैसा आश्चर्य है! आपसब सिंहोपरि अवस्थित एक स्त्री को देखकर ही क्यों भीत हो गएं?'' दुर्म्मति युधाजित् शत्रुजित् के साथ मिल कर युद्ध वासना से क्रोधित होकर सुदर्शन के समक्ष उपस्थित हुआ एवं उसके ऊपर निरन्तर सुतीक्ष्ण शिलाशाणित शरों से वर्षण करने आरम्भ करने पर सुदर्शन ने भी सुतीक्ष्ण शरों द्वारा शत्रुजित् को वेध दिया। इसप्रकार प्रबल संग्राम होते रहने से तब दुर्गनिहारिणी देवी चंडिका ने अतिक्रुद्ध होकर युधाजित् के ऊपर सरवर्षण आरम्भ किया। तत्पश्चात् वह कल्याणमयी जगदम्बिका नानारूप धारणकर एवं विभिन्न प्रकार के अस्त्रशस्त्र लेकर युधाजित् के सामने उपस्थित होकर भीषण संग्राम करने लगी। युद्ध में नृपति शत्रुजित् एवं युधाजित् उभय का ही निधन हो गया एवं वे रथ से पतित हो गए। अत: सुदर्शन ने युद्ध में जयलाभ किया। उनसब की मृत्यु हो रही है देखकर सकल महीपालगण परम आश्चर्यान्वित हुए। तत्काल में राजा सुबाहु भी उनसब के निधन दर्शन से परम प्रीत होकर दुर्गतिनाशिनी देवी दुर्गा का स्तव करने लगे –

''नमो देव्यै जगन्मात्रे शिवायै सततं नम:।
दुर्गायै भगवतै ते कामदायै नमो नम:।।
नम: शिवायै शास्तै ते विद्यातै मोक्षदे नम:।
विश्व व्याप्त्यै जगन्मातर्जगद्धात्र्यै नम: शिवे।।'' .....

राजा सुबाहु के स्तव से प्रसन्ना होकर देवी सुबाहु को वरदान करने चाहने से सुबाहु ने कहा, ''मैं आप के दर्शन लाभ से कृतार्थ हो गया हूँ। हे मात:! आप के प्रति मेरी चिरस्थायी अचला भक्ति रहें और परमाशक्ति आप 'दुर्गादेवी' नाम से विख्यात होकर आप सर्वदा इस वाराणसी धाम में अवस्थान कीजिएं एवं दुष्ट का दमन व शिष्ट का पालन कीजिए।

('देवी भागवत्' से संगृहीत कहानी)

हिन्दी अनुवाद – मातृचरणाश्रिता श्रीमती ज्योति पारेख

आगामी अनुष्ठान सुची

दुर्गा नवरात्रि – १६ अक्टूबर से २४ अक्टूबर
१९ अक्टूबर (पंचमी):– संध्या ६:३०मि. संगीतानुष्ठान
२१ अक्टूबर (सप्तमी):– संध्या ६:३०मि. संगीतानुष्ठान
२२ अक्टूबर (अष्टमी):– श्रीश्रीश्यामाचरण लाहिड़ी बाबा के तिरोभाव दिवस उपलक्ष्य पर दोपहर में भण्डारा।
२३ अक्टूबर (नवमी):– दोपहर में श्रीश्रीदुर्गादेवी का महाप्रसाद भण्डारा
कोजागरी पूर्णिमा (लक्ष्मीपूजा):– २९ अक्टूबर, सोमवार
वार्षिक साधारण सभा:– २५ नवम्बर, रविवार संध्या ६ बजे
रास पुर्णिमा:– २८ नवम्बर, बुधवार
भक्तनिवास व अन्नक्षेत्र उद्‌बोधन उत्सव:- ७ और ८ दिसम्बर
आध्यात्मिक सभा:- २५ दिसम्बर, संध्या ७ बजे
श्रीश्रीसारदा माँ की आविर्भाव तिथि:- ४ जनवरी २०१३, शुक्रवार
श्रीश्री गुरुमहाराजाओं का मन्दिर प्रतिष्ठा दिवस:- १३ - १४ जनवरी, २०१३